

सूचना प्रौद्योगिकी : कृषक महिला सशक्तीकरण में महत्व

सौरव गुप्ता*, डॉ. आर. एन. शर्मा, ज्योतिमाला साह, सशील यादव एवं बी.एस. कसाना

कृषि महाविद्यालय, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म. प्र.)

प्राप्त : अक्टूबर, 2016

सारांश

स्वीकृत : दिसम्बर, 2016

पिछले दशकों में सूचना के हमारे प्रमुख स्रोत प्रिंट मीडिया, रेडियो और टेलीविजन थे, परन्तु अब दूरसंचार क्रांति के फलस्वरूप मोबाइल की आमजन तक पहुँच ने सूचना एवं प्रौद्योगिकी को गांव-गांव एवं घर-घर तक पहुँचा दिया है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी को वर्षों के परिश्रम के माध्यम से विकसित किया गया है, जिसका आधुनिक समाज पर महत्वपूर्ण असर पड़ा है। तकनीकी प्रगति ने वैश्विक स्तर पर मानव जीवन को कार्य करने की क्षमता और गति को अपने उच्चतम स्तर पर पहुँचाया। कृषक एवं कृषक महिलायें साधारणतः अपनी फसल प्रबंधन एवं मवेशी प्रबंधन के कार्यों की जानकारी हेतु जिज्ञासु होते हैं, किन्तु प्रसार कार्यकर्ताओं की कमी एवं उनकी कर्तव्यनिष्ठा में लापरवाही के कारण समय पर सटीक कृषि जानकारी कृषकों तक नहीं पहुँच पाती है एवं असामयिक वर्षा एवं जलवायु परिवर्तन की परिस्थिति में उपज हानि अथवा फसल हानि से प्रभावित होते हैं। भारत सरकार द्वारा सन् 2009 में किसान पोर्टल का प्रारम्भ कर सूचना एवं प्रौद्योगिकी का कृषि प्रसार में उपयोग सुनिश्चित करने का प्रयास किया। इसी तारतम्य में कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से शीघ्र संदेश सेवा के द्वारा कृषकों का मोबाइल पर हिन्दी में कृषि, पशुपालन, गृह विज्ञान एवं अन्य महत्वपूर्ण जानकारियाँ समयानुसार तत्काल कृषक एवं कृषक महिलाओं को उपलब्ध कराया जाना शुरू किया गया। सर्वे में 5% कृषक एवं 15% महिला कृषक प्रतिभागियों ने इस योजना से कोई लाभ नहीं होना बताया। यहां उल्लेखनीय है कि 25-40 वर्ष के कृषक (95%) एवं महिला कृषक (85%) इस योजना से लाभ होने से सहमत पाये गये। इसी तारतम्य में ग्वालियर एवं दतिया जिलों के विभिन्न ग्रामों में 25 कृषकों एवं 25 कृषक महिलाओं के सर्वे के दौरान पाया गया कि 90% प्रतिभागी (कृषक) एवं 83% (महिला कृषक) प्रतिभागी संदेश की गुणवत्ता से सहमत थे। 85% (कृषक) प्रतिभागी एवं 70% (महिला कृषक) प्रतिभागी ने इस कथन से सहमति जताई कि मोबाइल के माध्यम से प्राप्त जानकारी उनके दैनिक जीवन में सहजता प्रदान करती है।

Bhartiya Krishi Anushandhan Patrika, 31(4), 318-320, 2016

INFORMATION TECHNOLOGY: THE IMPORTANCE OF EMPOWERING WOMEN FARMERS

Sourav Gupta*, R.N. Sharma, Jyotimala Sahu, Sushil Yadav and B.S. Kasana

College of Agriculture, Rajmata Vijayaraje Scindia Krishi Vishwa Vidyalaya, Gwalior (M.P.)

ABSTRACT

Our major sources of information in the past decades were print media, radio and TV, but as a result of the telecommunications revolution, the information and technology has reached to the households at village level. Information and technology has evolved through the years' hard work, which has important effect on modern societies. Technical progress at the global level has exalted human life to act at its highest level of flexibility and speed. Male and female farmers are generally curious to know their crop management and livestock management, but the lack of extension workers & due to their negligence of duty, the information does not reach farmers' at right time and untimely rain and climate change result in the event of yield loss or crop losses. The Government of India in 2009, started farmer portal to spread

*E-mail: souravgupta654@gmail.com

agricultural information and technology to ensure access. In the same sequence, through the Krishi Vigyan Kendras, the 'early message service' for farmers' in Hindi by the mobile on Agriculture, Home Science and other important information was made available for farmers, women farmers over time began immediately. In survey, 5% male farmers' and 15% female farmers participants reported to have no benefit from this scheme. It was noted that the 25-40 year old male farmers (95%) and women farmers (85%) were found to agree to get benefit from the scheme. The sequence of the various villages in the districts of Gwalior and Datia, 25 male farmers and 25 women farmers' in the survey found that 90% of the participants (male farmers) and 83% (women farmers) participants agreed with the quality of the message. 85% (male farmers) and 70% (women farmers) of the participants agreed with the statement that the information in their daily lives through mobile provides ease of doing things in their daily life.

प्रस्तावना

सूचना एवं प्रौद्योगिकी को वर्षों के अथक परिश्रम के फलस्वरूप विकसित किया गया है। आज के वैज्ञानिक युग में सूचना और प्रौद्योगिकी का उपयोग हर क्षेत्र में अति तीव्रता से बढ़ा है। वर्तमान समय में चारों ओर कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट के माध्यम से सूचनाओं का प्रसारण बहुत ही तीव्र गति से हो रहा है, इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2009 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने कृषि प्रसार के संबंध में सूचना एवं प्रौद्योगिकी के महत्व को स्वीकार करते हुए कृषकों को तकनीकी जानकारी की समय पर पहुंच सुनिश्चित करने के उद्देश्य से कृषि मोबाइल सलाह योजना की शुरुआत की। इस योजना में कृषि विज्ञान केन्द्र एवं अन्य कृषि संस्थाओं द्वारा मोबाइल पर एस. एम. एस. के माध्यम से तकनीकी जानकारी एवं अन्य सामाजिक जानकारी पहुंचा जा रही है (सेचिनी एवं स्कॉट, 2003)। आज जबकि मध्य प्रदेश में लगभग 90 लाख मोबाइल उपभोक्ता हैं, अर्थात् लगभग हर परिवार में एक मोबाइल उपलब्ध है इस योजना तकनीक के माध्यम से

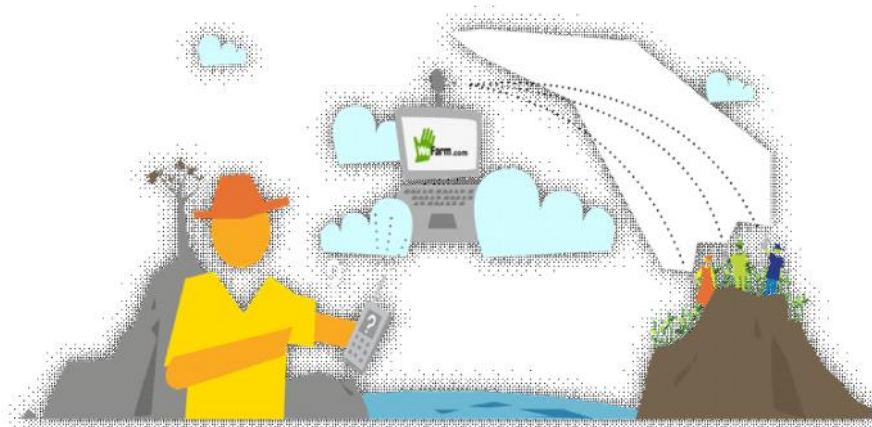
सूचना पहुंचाना आसान एवं प्रभावी तरीका साबित हो रहा है (चित्र-1)। उपरोक्त योजना की प्रभाविकता को जानने के उद्देश्य से प्रस्तुत सर्वे कार्य ग्वालियर एवं दतिया के कल चयनित 50 कृषकों पर किया गया।

सामग्री एवं परीक्षण विधि

प्रस्तुत अध्ययन करने के लिए ग्वालियर एवं दतिया जिलों के 25-25 मोबाइल उपभोक्ता कृषकों का यादृक्षिक रूप में चयन किया गया (तालिका-1)। इसके पश्चात् दूरभाष के माध्यम से पहले से तैयार प्रश्नावली का प्रयोग करते हुए जानकारी एकत्रित की गई। प्राप्त जानकारी को प्रतिशत मात्रा में व्यक्त कर परिणाम प्राप्त किए गए।

तालिका-1: आय के आधार पर चयनित कृषकों का वर्गीकरण

| आयु समूह | पुरुष कृषक | कृषक महिला |
|----------|------------|------------|
| 25-40 | 13 | 12 |
| 40-60 | 12 | 13 |
| कुल कृषक | 25 | 25 |



चित्र-1: कृषि मोबाइल सलाह तकनीक

परिणाम एवं विवेचना

तालिका-2: सर्वे में प्राप्त आंकड़ें।

| प्रश्न | पुरुष कृषक | | कृषक महिला | |
|--|------------|-------|------------|-------|
| | सहमत | असहमत | सहमत | असहमत |
| प्राप्त संदेश की गुणवत्ता | 90 | 10 | 83 | 17 |
| प्राप्त जानकारी का दैनिक उपयोग में लाभ | 85 | 15 | 70 | 30 |
| प्राप्त संदेश से कृषि में लाभ | 78 | 22 | 67 | 33 |
| योजना की उपयोगिता | 95 | 05 | 85 | 15 |

तालिका-3: आय के अनुसार सर्वे में पड़े गए प्रश्न का विवरण

| आय समूह | प्रश्न | पुरुष कृषक | | कृषक महिला | |
|---------|--------|------------|-------|------------|-------|
| | | सहमत | असहमत | सहमत | असहमत |
| 25-40 | 1 | 100 | 0 | 100 | 0 |
| | 2 | 98 | 2 | 97 | 3 |
| | 3 | 100 | 0 | 100 | 0 |
| | 4 | 100 | 0 | 100 | 0 |
| 40-60 | 1 | 87 | 13 | 95 | 5 |
| | 2 | 92 | 8 | 96 | 4 |
| | 3 | 93 | 7 | 94 | 6 |
| | 4 | 98 | 2 | 99 | 1 |

प्रस्तुत अध्ययन के अनुसार चयनित कृषकों को दो आयु वर्ग क्रमशः 25-40 वर्ष एवं 40-60 वर्ष में वर्गीकृत किया गया तथा प्रश्नावली में प्राप्त जानकारी का वर्गीकरण साधारणतः आयु समूह अनुसार किया गया। परिणामों से प्राप्त हुआ कि 25-40 वर्ष आयु समूह के लगभग 99.37% प्रतियोगियों ने योजना का लाभ प्राप्त होना बताया जिनमें 99.50% पुरुष कृषक एवं 99.25% महिला कृषक तथा 40-60 वर्ष आयु समूह के लगभग 94.25% प्रतियोगियों ने योजना का लाभ प्राप्त होना बताया जिनमें 92.5% पुरुष कृषक एवं 96% महिला कृषक शामिल थे। इसी प्रकार 90% कृषक एवं 83% कृषक महिलायें तथा कुल 86.5% प्रतिभागी मोबाइल संदेश से प्राप्त जानकारी की गुणवत्ता से सहमत थे तथा इसी प्रकार 85% कृषक एवं 70% कृषक महिलाओं के साथ कुल 77.5% प्रतिभागी संदेश से प्राप्त जानकारी को दैनिक जीवन के लिए उपयोगी बताया (तालिका-2 एवं 3)।

इसी क्रम में 72.5% कृषकों ने प्राप्त संदेशों से कृषि उत्पादकता में लाभ होने की पुष्टि की थी तथा 90% प्रतिभागी कृषकों ने योजना से सीधे लाभ होना बताया (मोनी एवं उद्दिन, 2004)।

सारांश रूप में उपरोक्त अध्ययन के अनुसार यह कहा जा सकता है कि कृषि तकनीकी प्रसार हेतु सूचना एवं प्रौद्योगिकी के प्रयोग से न केवल कम समय में उपयुक्त जानकारी/तकनीकी को सीधे अंतिम उपभोक्ता/कृषक तक पहुंचाया जा सकता है अपितु कम से कम खर्च में कृषि एवं तकनीकी प्रसार संभव है।

संदर्भ

- Aminuzzaman, S.M. (2002). Cellular phones in rural Bangladesh: A study of the Village Pay Phone of Grameen Bank. In A. Goldstein and D. O'Connor (Eds.), *Electronic commerce for development* (pp. 161-178). Paris: OECD Publishing.
- Cechini, S. and Scott, C. (2003). Can information and communications technology applications contribute to poverty reduction? Lessons from rural India. *Information Technology for Development*. 10(2): 73-84.
- Jorge, S. (2002). The economics of ICT: Challenges and practical strategies of ICT use for women's economic empowerment. Paper presented at the UNDAW Expert Group meeting, Information and communication technologies and their impact on and use as an instrument for the advancement and empowerment of women, Seoul, Republic of Korea.
- Moni, M.H. and Uddin, M.A. (2004). Cellular phones for women's empowerment in rural Bangladesh. *Asian Journal for Women's Studies*. 10(1): 70-89.